International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 815-817

कांग्रेस समाजवादी पार्टी

डॉ0 अमित कुमार राय

इतिहास विभाग, पी.जी. कॉलेज, गाजीपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

भारतीय समाजवादी आन्दोलन 20वीं सदी के तीसरे दशक के शुरूआत में तथा भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के मध्य में उभरा और उसने दो मोर्चों पर एक साथ काम करना शुरू किया जिसमें पहला था भारत की पूर्ण स्वतन्त्राता व दूसरा भारत में समाजवाद की स्थापना। निश्चित रूप से यह समाजवादी उभार 1848 के कम्युनिस्ट घोषणा पत्रा, 1917 की रूसी क्रान्ति तथ राष्ट्रीय स्वतन्त्राता की तड़प के कारण आया था। सन् 1922 से 1939ई. के बीच भारत में समाजवादी आन्दोलन की गति कापफी तीव्र रही।[1]

कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के गठन से पहले 1930 से 1933 के बीच समाजवादी विचार करने वाले लोग स्थानीय या प्रांतीय स्तर पर अलग–अलग ग्रुपों का गठन कर रहे थे।[2] जुलाई 1931 में जय प्रकाश नारायण, पूफलन प्रसाद वर्मा तथा अन्य लोगों ने बिहार समाजवादी दल की नींव रखी। 1933 में पंजाब समाजवादी दल बना, परन्तु अब एक अखिल भारतीय समाजवादी दल की आवश्यकता महसूस की जाने लगी थी। इसी आवश्यकता को महसूस कर आचार्य नरेन्द्रदेव जी ने नेहरू जी को लिखा था कि फ्एक नये आधर पर समाज पर पुर्ननिर्माण करने का विश्वास सामान्यतः हम सब का हो सकता है, पर समाज की जिन सामाजिक और आर्थिक सि(ान्तों के आधर पर पुर्नरचना होनी है उनके बारे में जब तक हमारी समझ स्पष्ट न हो और जब तक यह न जाने कि इस काम को आगे कैसे बढ़ाना है, तब तक हमारी आस्थाओं में गहराई नहीं आती और इसलिए हमारे काम में भी गंभीरता नहीं आ पाती।[3] आवश्यकता की इसी पृष्ठभूमि में यह स्वाभाविक ही था कि जय प्रकाश नारायण, अच्युत पटवर्ध्न, युसुपफ मेहर अली, अशोक मेहता, एम.आर. मसानी, एन.एम. जोशी, एवं जी. गोरे और के.के. मेनन आदि पर आधारित नासिक जेल वाले समूह ने और आचार्य नरेन्द्र देव, राम मनोहर लोहिया, गंगा शरण, सिंह, पफरीद अंसारी तथा भारत के विभिन्न अचलों के अन्य लोगों ने मिलकर पटना में 17 मई 1934 में कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना की और आचार्य नरेन्द्र देव से इसकी अध्यक्षता करने का निवेदन किया गया।[4] इनकी अध्यक्षता में फ्पार्टी की नीति, कार्यक्रमएवं संविधन की रचना के लिए समिति का गठन किया गया जिसमें लोहिया को भी सम्मिलित किया गया। आगे चलकर 21 और 22 अक्टूबर 1934 को बम्बई में फ्कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का जन्म हुआ। इस सम्मेलन के अध्यक्ष डा. सम्पूर्णानन्द थे। पार्टी का महामंत्राी जय प्रकाश नारायण को चुना गया।[5] वास्तव में यहीं से भारत में अखिल भारतीय स्तर पर संगठित समाजवादी आन्दोलन की शुरूआत होती है।

प्रारम्भ से ही दो मुख्य प्रस्थापनाओं पर सभी कांग्रेस समाजवादी आपस में सहमत थे– भारत में आधरभूत संघर्ष, स्वतन्त्राता के लिए राष्ट्रीय संघर्ष था और समाजवाद तक पहुँचने के लिए राष्ट्रवाद आवश्यक अवस्था थी। समाजवादियों को कांग्रेस के भीतर ही रहकर काम करना चाहिए क्योंकि राष्ट्रीय संघर्ष का नेतृत्व करने वाली यह आधरभूत संस्था थी और जैसा कि 1934 में नरेन्द्र देव ने कहा था कि– फ्हम लोगों के लिए राष्ट्रीय आन्दोलन से कट जाना आत्मघाती कदम होगा। कांग्रेस ही वस्तुतः इसका प्रतिनिध्वि करती है, कांग्रेस और राष्ट्रीय आन्दोलन को हर हालत में हमें समाजवादी दिशा प्रदान करनी चाहिए और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए मजदूरों और किसानों को उनके वर्ग–संगठनों में संगठित करना चाहिए, उनकी आर्थिक मांगों के लिए संघर्ष चलाना चाहिए और उनको राष्ट्रीय संघर्ष की बुनियाद बनाना चाहिए। 'इसीलिए समाजवादी पार्टी के सदस्यों के लिए कांग्रेस की सदस्यता अनिवार्य बताया गया। पफलश्वरूप स्वतन्त्राता प्राप्ति तक यह पार्टी 'कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी' के रूप में कांग्रेस के अन्दर रह कर कार्य करती रही। उनके द्वारा इस प्रकार का नेतृत्व प्रदान किये जाने के कारण कांग्रेस का आधर देश की शोषित और पीड़ित जनता में व्यापक रूप से बढ़ता गया। साथ ही कांग्रेस पर भी देश की आम जनता का प्रभाव तथा दबाव भी बढ़ता गया और उसने व्यापक रूप से जन संगठन का रूप ले लिया। भारतीय स्वतन्त्राता संग्राम में आचार्य नरेन्द्र देव का यह अद्भुत योगदान था जिसका आगे चलकर अद्भुत चमत्कार देखने को मिला।[7]

कांग्रेस समाजवादी पार्टी ने एकदम शुरू से ही अपने को कांग्रेस को रूपांतरित करने और साथ ही इसको मजबूत करने के काम में लगाया। कांग्रेस को रूपान्तरित करने के काम को दो अर्थों में समझा जाता था। एक विचारधरात्मक आधर पर और दूसरा कार्यक्रम के आधर पर। कांग्रेस जनों को धीरे–धीरे इस बात के लिए राजी करना था कि वे स्वतन्त्रा भारत के लिए समाजवादी दृष्टि अपनाएं तथा वर्तमान आर्थिक मुद्दों पर उनका रूख किसानों तथा मजदूरों के पक्ष में होना चाहिए। बहरहाल, इस विचारधरा और कार्यक्रम पर आधरित रूपान्तरण को घटना के रूप में नहीं, बल्कि एक प्रक्रिया के रूप में समझा जाना चाहिए। जैसाकि 1934 में अपने अनुयायियों से जयप्रकाश नारायण ने बार–बार कहा था, कि फ्कांग्रेस के सामने हम एक कार्यक्रम रख रहे हैं और हम चाहते हैं कि कांग्रेस इसको मान ले। हम यह नहीं कह रहे हैं कि हम कांग्रेस छोड़कर बाहर निकल रहे हैं। यदि आज हमें सपफलता नहीं मिलतीं, कल हम पिफर कोशिश करेंगे, यदि कल भी हम असपफल होते हैं, हम भविष्य में पिफर कोशिश करेगें।[8]

फ्हमारे कार्यक्रम का सीध–सादा अर्थ यह है कि हम व्यक्तिगत ध्न के उस भूत को दपफन कर देना चाहते हैं, जिसके चलते ही हमारा घर अंशाति और गंदगी का अखाड़ा बन गया है। उस भूत के दपफन करने के बाद हम चाहते हैं कि इस घर को कोई अच्छी तरह चलाने के लिए एक सुंदर आर्थिक योजना बना लें और उसे काम में लाने के लिए सब मिलजुलकर पिल पड़ें।[9]

अपने लक्ष्य और दिशा निर्देशों को ध्यान में रखते हुए

समाजवादियों ने तीन मोर्चों पर कार्य प्रारम्भ किया जिनके कारण कांग्रेस द्वारा चलाये जा रहे स्वतन्त्राता संग्राम को आश्चर्यजनक शक्ति प्राप्त हुई। स्तर पर किसान–सभा की स्थापना हुई, जिसे आचार्य नरेन्द्र देव दो बार अध्यक्ष के रूप में नेतृत्व प्रदान किये। स्वामी सहजानन्द, स्वामी भगवान, सुरेश देसाई प्रमुख नेता थे। ये सभी कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी से सम्ब(थे। किसान–सभा के कारण भारत के किसान सीध्े रूप में कांग्रेस के स्वतन्त्राता संग्राम से जुड़ रहे थे।

दूसरा मोचो मजदूरों के संगठन का था जिसमें रेल के मजदूरों के अखिल भारतीय पेफडरेशन की अध्यक्षता क्रमशः जयप्रकाश नारायण, पीटर अलवारिस और एस.एम. जोशी कर रहे थे तथा अन्य मजदूर संगठनों में एम. एम. जोशी कार्य कर रहे थे।

तीसरा मोर्चा देशी रियासतों में प्रजा परिषद् का गठन करके राष्ट्रीय आन्दोलन को 600 देशी रियासतों में पैफलाने का था। इस प्रकार समाजवादियों ने किसानों, मजदूरों और देशी रियासतों की जनता को राष्ट्रीय आन्दोलन की मुख्य धरा से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य करके स्वतन्त्राता संग्राम में जन–शक्ति का संचार किया। देशी रियासतें अंग्रेजी राज्य को सम्बल प्रदान करने की इकाई थीं। समाजवादियों ने प्रजा परिषद् को सक्रीय रूप प्रदान कर भारत में अंग्रजों के उस बड़े आधर को कमजोर करने का बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया।[10]

1936 में कांग्रेस में लोहिया के परराष्ट्र विभाग के सचिव होने से पूर्व साम्राज्यवाद के विरोध् के अतिरिक्त अन्य कोई कांग्रेस की नीति नहीं थी। उन्होंने विभिन्न पराधीन देशों से तथा स्वतन्त्रा लोकतन्त्रावादी देशों से सम्पर्क किया था तथा भारत की स्वतन्त्राता के लिए एक मंच तैयार किया। लोहिया के अनुसार प्फएशियाई और अप्रफीकी देशों को चाहिए कि वे एक नवीन विश्व व्यवस्था को कायम करने के लिए पूंजीवाद और साम्यवाद के आपसी संघर्षों से अलग हटकर अपनी तीसरी शक्ति का गठन करें।[11]

सन् 1936 में कांग्रेस समाजवादी दल ने जय प्रकाश नारायण द्वारा लिखित 'समाजवाद क्यों?' नामक एक लेख प्रकाशित किया जिसमें उन्होंने समाज के मार्क्सवादी रूप को मान्यता दी थी। इसके बाद दिसम्बर 1936 में कांग्रेस के पैफजपुर अध्विेशन में समाजवादी व्यवस्था पर अधरित एक 13 सूत्राीय कार्यक्रम पारित किया गया।[12]

स्वाधीनता के अन्तिम संग्राम को छेड़ने के प्रश्न पर कांग्रेस में दुविध थी। जब एक तरपफ लोकतान्त्रिक शक्तियाँ अर्थात अंग्रेज तथा दूसरी ओर पफासिस्ट शक्तियां अर्थात् जर्मनी आमने सामने हों तो राष्ट्रीय स्वतन्त्राता संग्राम छेड़ना कहाँ तक उचित होगा? इसलिए इस प्रश्न पर कांग्रेस दुविध में थी। कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी को कोई दुविध नहीं थी। वह अग्रेजों से भारत की मुक्ति का संग्राम छेड़ने को तैयार थी। अन्ततः संघर्ष छेड़ने का निर्णय गांधीजी ने ले ही लिया। परिणामतः 7 और 8 अगस्त 1942 को बम्बई में आयोजित कांग्रेस अध्विेशन में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का प्रस्ताव पारित हुआ। 9 अगस्त को कांग्रेस व्रकिंग कमेंटी के प्रायः सभी सदस्य गिरफ्रतार कर लिये गये। कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के अध्किांश नेता भूमिगत हो गए थे। लोहिया ने इस संग्राम का कुशल संचालन करने के लिए कई बुलेटिन निकाले तथा पत्रा–पत्रिकायें प्रकाशित की। उन्होंने इस संघर्ष को वैज्ञानिक आधर दिया तथा नीति तैयार की। इसके अतिरिक्त अन्य समाजवादी नेता अच्युत पटवर्धन, अरूणा आसपफ अली, अशोक मेहता आदि ने संघर्ष को तीव्र करने की रणनीति बनाई। ब्रिटिश सरकार को चकमा देकर 8 अगस्त 1942 से 20 मई 1944 तक लोहिया भूमिगत रहे और क्रांति का नेतृत्व करते रहे। उसके कारनामें आम देशवासियों में रोमांच पैदा कर देते थे।[13]

भारत छोड़ो आन्दोलन में कांग्रेस सोशलिस्ट के नेताओं की भूमिका अचानक बहुत बढ़ गई थी। ऐतिहासिक 'भारत छोड़ों' प्रस्ताव का मसविदा तैयार करने में गांधी जी के कहने पर नरेन्द्र देव ने नेहरू की मदद की थी।[14] जय प्रकाश नारायण और कांग्रेस समाजवादी 1942 के आन्दोलन को क्रान्ति की शुरूआत मानते थे। उनका लक्ष्य सम्राज्यवादी अंग्रेजी सरकार को उखाड़ पेंफकना था और इसको पूरा करने के लिए वे हिंसा को अपरिहार्य मानते थे।[15] 1946 में कैबिनट मिशन के प्रस्तावों से कांग्रेस और कांग्रेस समाजवादी असंतुष्ट थे तथा उसे अपर्याप्त मानते थे। कांग्रेस समाजवादी पार्टी का कहना था कि संविधन सभा में उस समय तक हिस्सा नहीं लेना चाहिए जब तक भारत से ब्रिटेन की सेनायें हटा न ली जायें। लेकिन कांग्रेस ने समझौता स्वीकार कर लिया। इसका अर्थ यह भी था कि कांग्रेस ने देश के विभाजन की शर्त भी स्वीकार कर ली। प्फ1947 में भारतीय समाजवादियों ने भारत विभाजन को कांग्रेस द्वारा स्वीकार किये जाने की कटु आलोचना की और उसे एक कृत्रिम विभाजन भी माना, परन्तु वे तटस्थ रहे क्योंकि उनके पास इसका कोर्ट विकल्प नहीं था।[17]

अन्ततः 1948 में नासिक अध्विेशन में कांग्रेस समाजवादियों ने कांग्रेस से पृथक होकर एक स्वतन्त्रा समाजवादी दल का निर्माण कर लिया।

इस प्रकार भारतीय राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम में कांग्रेस समाजवादी पार्टी और उसके नेतृत्व की जो भूमिका और योगदान था वह एक विशिष्ट स्थान रखता है। इसने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को तथा स्वाधीनता आन्दोलन को न केवल मजबूत किया वरन उसे सै(ान्तिक और व्यावहारिक दोनों स्तरों पर समाजवादी दिशा प्रदान की। कांग्रेस समाजवादी पार्टी ने समाजवाद के सि(ान्त को स्वीकारते हुए राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम को जन आन्दोलन के रूप में संगठित करने तथा उसे लोकतान्त्रिक रूप देने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

सन्दर्भ

1. समाजवादी आन्दोलन का इतिहास, राम मनोहर लोहिया, समता विद्यालय न्यास प्रकाशन, 1969, पृष्ठ संख्या–12.....।
2. समाजवादी आन्दोलन का दस्तावेज, विनोद प्रसाद सिंह, प्रतिपक्ष प्रकाशन, दिल्ली, 1986, पृष्ठ संख्या–1.....।
3. वही, पृष्ठ संख्या–43.....।
4. भारत में सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन – आचार्य नरेन्द्र देव का चिंतन, प्रेम भसीन, आचार्य नरेन्द्र देव समाजवादी संस्थान वाराणसी, 1991, पृष्ठ संख्या–8–9.....।
5. भारतीय समाजवाद के शिल्पी ;प्रथम खण्डद्ध, मुख्तार अनीस, समाजवादी अध्ययन एवं शोध् संस्थान, लखनउफ, 2000, पृष्ठ संख्या–132.....।
6. भारत का स्वतन्त्राता संघर्ष, विपिन चन्द्र, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2007, पृष्ठ संख्या–24.....।
7. यंग इंडियन ;विशेषांकद्ध, अक्टूबर 1989, संपादक–के.पी. श्रीवास्तव, आचार्य नरेन्द्र देव समाजवादी संस्थान, वाराणसी, पृष्ठ संख्या–192.....।
8. भारत का स्वतन्त्राता संघर्ष, विपिन चन्द्र, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2007, पृष्ठ संख्या–24.....।
9. जय प्रकाश नारायणः एक जीवनी, राम वृक्ष बेनीपुरी,

किताब घर, दरियांगज, नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ संख्या 97–98..... ।
10. यंग इंडियन ;विशेषांकद्ध, अक्टूबर 1989, सम्पादक– के पी. श्रीवास्तव, आचार्य नरेन्द्र देव समाजवादी संस्थान, वाराणसी, पृष्ठ संख्या–192..... ।
11. भारतीय समाजवाद के शिल्पी ;प्रथम खण्डद्ध, मुख्तार अनीस, समाजवादी अध्ययन एवं शोध संस्थान, लखनउफ, 2000, पृष्ठ संख्या 133..... ।
12. कांग्रेस का इतिहास, खण्ड–2, पट्टाभी सीतारमैपा, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1946, पृष्ठ संख्या–38..... ।
13. भारतीय समाजवाद के शिल्पी, प्रथम खण्ड, मुख्तार अनीस, समाजवादी अध्ययन एवं शोध संस्थान, लखनउफ, 2000, पृष्ठ संख्या 136..... ।
14. यंग इण्डियन, विशेषांक अक्टूबर 1989, सम्पादक के.पी. श्रीवास्तव, आचार्य नरेन्द्र देव समाजवादी संस्थान, वाराणसी, पृष्ठ संख्या 193..... ।
15. भारत में समाजवादी आन्दोलन ;1934–1984द्ध, चन्द्रोद्य दीक्षित, प्रकाशक–कल्याण प्रिंटिंग प्रेस, लखनउफ, पृष्ठ–81..... ।
16. वही, पृष्ठ 88..... ।
17. राम मनोहर लोहिया, इंदुमति केलकर, नेशनल बुक इस्ट, इण्डिया, नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ संख्या–94..... ।